ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को प्रकाशकोत्सव
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 39, अंक 51 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 अक्टूबर, 2016 से रविवार 30 अक्टूबर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

133वें महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर विशेष

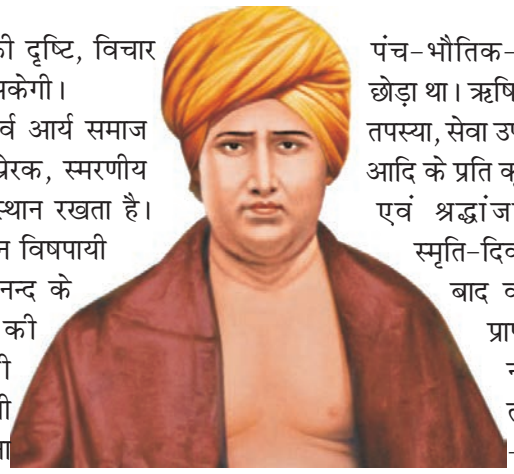

निराले ऋषि की निराली दीवाली

– डॉ. महेश विद्यालंकार

''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय'' दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। असत्स से सत्य, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश मृत्यु से अमृतत्व, पाप से पुण्य, शरीर से आत्मा और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलने का प्रेरणा-पर्व है। आज बहिर्जगत में रोशनी, चमक, दमक, भौतिक उन्नति-प्रगति, सुख-साधन आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। अन्तर्जगत में अन्धकार, जड़ता, अशान्ति, असन्तोष, इच्छाएं, वासनाएं, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि का अन्धेरा तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह पर्व प्रतिवर्ष ज्ञान रूपी प्रकाश लाने व फैलाने का अमर सन्देश देने आता है। यदि जीवन-जगत को सुखी, शान्त, सन्तुष्ट और सर्वेभवन्तुः सुखिनः बनाना है तो सत्ज्ञान की आँखें खोलकर जीओ व चलो। तभी संसार में विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व तथा विश्वमानवता की दृष्टि, विचार एवं भावना आ सकेगी।

दीपावली का पर्व आर्य समाज के इतिहास में प्रेरक, स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषिवर देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमरबेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच-भौतिक-नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप, त्याग, तपस्या, सेवा उपकारों योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति-दिवस है। युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा-बेला है। यह देवपुरुष जाते-जाते भी असंख्य ज्ञान-दीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन-दृष्टि दे गया। उसी मुक्तात्मा की अमर-कहानी दीवाली हर वर्ष दुहराने आती है। ऐसी देवात्माएँ दुनिया में कभी-कभी आती हैं। प्रभु की इच्छा से आती हैं और उसी की इच्छा में अपनी इच्छा को पूर्णमानकर बिदा हो जाती हैं। ऋषि का जीवन भी निराला था और दीवाली भी निराली थी। ये प्रेरक पंक्तियां सत्य हैं–

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा,
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य।

आर्य समाज ऋषि का जीवन्त स्माकर है। ऋषि का समग्र जीवन-दर्शन, मन्तव्य, विचार, सिद्धान्त, उद्देश्य, आदर्श आदि आर्य समाज को वसीयत, विरासत तथा परम्परा में

– शेष पृष्ठ 3 पर

..........दीपावली का पर्व आर्य समाज के इतिहास में प्रेरक, स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषिवर देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमरबेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच-भौतिक-नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप, त्याग, तपस्या, सेवा उपकारों योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति-दिवस है। युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा-बेला है। यह देवपुरुष जाते-जाते भी असंख्य ज्ञान-दीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन-दृष्टि दे गया।....

सूर्य सोने चल दिया, लेकिन सितारों को जगाकर;
एक दीपक बुझ गया लाखों चिरागों को जलाकर।
कह रहे बलिदान प्रेमी आज दिवाली मनाकर;
आज कोई मर गया लेकिन हमें मरना सिखाकर।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2016 नेपाल (काठमांडु) में सम्पन्न

10 हजार से अधिक आर्यजनों ने दर्ज कराई देश-विदेश से उपस्थिति

आगामी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की हुई घोषणा

म्यांमा (बर्मा) में होगा वर्ष 2017 का

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा (बर्मा)

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में

वेद-स्वाध्याय

उस इन्द्र को देखो

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् से जनास इन्द्रः।। -ऋ. 2/12/9
ऋषिः **गृत्समदः।।** देवताः **इन्द्रः।।** छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **जनासः**=हे मनुष्यो! **इन्द्रः सः**= परमेश्वर वह वस्तु है **यस्मात् ऋते जनासः न विजयन्ते**= जिसके बिना मनुष्यों को कभी विजय नहीं मिलती और **यं युध्यमानाः अवसे हवन्ते**= जिसे युद्ध करते हुए सब मनुष्य रक्षा के लिए पुकारते हैं तथा **यः विश्वस्य प्रतिमानं बभूव**= जो विश्व का प्रतिमान अर्थात् उसके प्रत्येक पदार्थ का निर्माता होकर, सब विश्व को अपने में रखकर, तद्रूप हुआ-हुआ है **यः अच्युतच्युत्**= और जो न डिगनेवाले बड़े दृढ़ पदार्थों को भी डिगा देता है।

विनय- लोग 'ईश्वर', 'ईश्वर' नाम लिया करते हैं, परन्तु हे मनुष्यो! क्या तुम उसे अनुभव करते हो? बेशक, वह इन्द्रियों से परे होने के कारण आँख आदि से ग्रहण नहीं किया जा सकता, तो भी प्रत्येक मनुष्य उसे अनुभव कर सकता है। इस संसार में मनुष्य को जो कुछ विजय मिलता है वह सब उसी से मिलती है। उसकी अनुकूलता के बिना बड़े-से-बड़े बली, अभिमानी को विजय नहीं मिल सकती। सब विजय उसी की है, अतः जहाँ प्रत्येक विजय में हम उसकी महत्ता का अनुभव करें, वहाँ अपनी प्रत्येक हार में भी उसकी महत्ता को देखें, जिसकी स्वीकृति न होने क कारण ही हमें प्रत्येक हार मिलती है। इस युद्धमय संसार में मनुष्य जब अपनी सब प्रकार की शक्ति से निराश हो जाता है और हारता हुआ अपने को बिल्कुल बेबस जानकर जिस एक अज्ञात और अपने से ऊँची शक्ति को पुकारने लगता है, वही शक्ति परमेश्वर है। नास्तिक पुरुष के हृदय में भी उस चरम निःसहायता की अवस्था में किसी अन्य शक्ति से सहायता पाने की छिपी हुई आशा प्रकट हो जाती है। उस शक्ति को क्यों नहीं देखते? अपनी इस चरम निःसहाय दशा में हारकर, बेबस होकर उस ईश्वरीय शक्ति को अनुभव करो जिसके बिना संसार में कोई भी विजय नहीं मिलती। देखो, यह वह है जिसे रक्षा पाने के लिए सब मनुष्य युद्धों में पुकार रहे हैं और यदि चाहो तो संसार की एक-एक वस्तु में उसे अनुभव करो। यह सब विश्व उसी को दिखा रहा है। यह संसार और किसमें रक्खा हुआ? इस विश्व को किसने धारा हुआ है? यही वह है जो इस सब संसार का आधार, सार और आत्मा है और ऐसा होकर भी जो संसार की प्रत्येक वस्तु में ऐसा तद्रूप (ऐसा तत्प्रतिम) हो बैठा है कि मनुष्य संसार की वस्तुओं को देखते हैं पर उसे नहीं देखते, परन्तु यह न दीखनेवाला ही सब-कुछ है। इस संसार में जो असम्भव सम्भव हो रहे हैं, जिनके कभी मिटने की सम्भावना नहीं होती वे क्षण-भर में मिट जाते हैं। ये सब काम वही न दीखनेवाला कर रहा है। जिन्हें यह दुनिया अडिग समझती है, वह उन्हें भी चुपके से गिरा देता है। उस 'अच्युतच्युत्' को देखो! संसार की एक-एक वस्तु में रमे हुए उसे देखो! वह विश्वमय होकर हमारे सामने खड़ा है; उसे क्यों नहीं देखते? हे मनुष्यो! उसे देखो, वही इन्द्र है, वही परमेश्वर है।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय
यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

डिस्को की आड़ में सुप्रीम कोर्ट!

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है। जिसमें चाहे सरकार शामिल हो, न्यायालय हो या हमारा समाज। अभी हाल ही में एक बार फिर देश की संस्कृतिक विरासत पर उच्च न्यायालय को हावी होते सभी ने देखा है। सुप्रीम कोर्ट ने डांस बार में शराब परोसने पर पाबंदी, संबंधी महाराष्ट्र के नए कानून को असंगत और पूरी तरह से मनमाना करार दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि इस तरह की पाबंदी यह बताती है कि राज्य सरकार की सोच सदियों पुरानी है। अगर शराब न परोसी जाए तो बार लाइसेंस देने का क्या मतलब था। जबकि महाराष्ट्र सरकार के पक्षाकार का कहना है कि शराब पीना और परोसना हमारे मूल अधिकार नहीं हैं। ज्ञात हो महाराष्ट्र में कांग्रेस-एनसीपी की सरकार ने 2005 में डांस बार पर रोक लगा दी थी। क्योंकि यह सामाजिक बुराई का प्रतीक था। उस समय इस गठबंधन सरकार के फैसले का व्यापक रूप से स्वागत हुआ था और देखते ही देखते इस रोक की चपेट में ठाणे, नवी मुंबई, पुणे, रायगढ़ के डांस बार भी आ गए। गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस रोक की वजह से करीब 6 लाख महिलाएं बेरोजगार हो गई थीं। साल 2013 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा डांस बार से प्रतिबंध ा हटा दिया गया पर अगले वर्ष 2014 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा पुलिस अधिनियम में दोबारा इसे लागू करने के सम्बंध में नया प्रावधान लाया गया था। किन्तु अक्टूबर 2015 में सर्वोच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र में डांस बार पर लगी रोक को यह कहते हुए कि बार में डांस हो सकता है लेकिन किसी तरह की फूहड़ता नहीं, सशर्त हटाने का फैसला सुनाया था जिसके बाद डांस बार धड़ल्ले से चल निकले थे।

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न-भिन्न रूपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी हो, इन्दिरा गाँधी हो, ओलम्पिक में पदक जीतने वाली साक्षी मलिक या पी.वी. संधू, हो। किन्तु इन्हीं सबके बीच से निकलकर आई वो नारी भी है जिन्हें ''बार बाला'' बोला जाता है। गरीबी, भूख, बेरोजगारी या मजबूरी इन्हें खींच लाती है इन अमीरों की ऐशगाह में। जहाँ उन्हें कुछ छोटी मोटी रकम के लिए कम से कम कपड़े पहनकर जिस्म की नुमाइश के बदले पैसे मिलते हैं। जब महाराष्ट्र सरकार ने इसे हमारी संस्कृति के खिलाफ है, अश्लीलता बताकर बंद करने का आदेश दिया तो सुप्रीम कोर्ट ने यह कहकर आदेश निरस्त कर दिया कि ये अश्लीलता नहीं बल्कि उनकी कला है। अगर वे इन बार में अपनी कला का प्रदर्शन कर रही हैं तो उसे गलत नहीं कहा जाना चाहिए।

मामला यहीं रुकता दिखाई नहीं दे रहा है। पीठ ने डांस बार में सीसीटीवी कैमरे लगाने की अनिवार्यता पर भी सवाल उठाए। जवाब में सरकार के वरिष्ठ वकील ने कहा कि अगर डांस बार में कुछ गलत होता है तो सीसीटीवी फुटेज से पुलिस को जांच में मदद मिलेगी। मगर कुछ लोग इस फैसले से खुश नहीं हैं क्योंकि वह कहते हैं सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने का फैसला आम आदमी की निजता में दखलंदाजी है और यह तर्क सामने रखे कि यह सब हमारी संस्कृति का हिस्सा है हमारी संस्कृति के अनुसार दरबार में महिलाएं डांस करती थीं और उस दरबार में शराब भी परोसी जाती थी। अगर उनके डांस का ही सवाल है, तो आज से नहीं बल्कि पिछले कई सैंकड़ों सालों से महिलाएं पुरुषों या भीड़ के सामने डांस कर रही हैं। यहां तक कि भगवान इंद्र के युग से लेकर राजा-महाराजों के दरबार में महिलाओं की ओर से डांस किया जाता था। बहरहाल इतना कहा जा सकता है कि अभी हमारे देश का पतन और अधिक होता दिखाई दे रहा है। दरअसल जब कभी पौराणिकों ने काल्पनिक इंद्र और उसकी सभा में नाचती नर्तकी का उल्लेख कर इस झूठ को सत्य का रूप दिया होगा उन्होंने खुद नहीं सोचा होगा कि इनके इस झूठ की कीमत नारी जाति को हमेशा चुकानी पड़ेगी। अक्सर हमारी सरकारें एक ओर तो नारी को शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित कर उसे महिमामंडित करती है, जगह-जगह लोग नारी जागृति, नारी सम्मान की बात करते हैं। बड़े अधिकारी, नेतागण, अन्य सभी बुद्धिजीवी लोग सभाओं, गोष्ठियों एवं छोटे-बड़े मंचों पर नारी के समान अधिकार, महिला उत्पीड़न के मुद्दों पर लच्छेदार भाषण झाड़ते हैं, लेकिन दूसरी ओर असल जीवन में इस पुरुष प्रधान समाज का नारी के प्रति वास्तविक नजरिया कुछ और ही होता है।

समझने को काफी है कि एक बार डांसर का जीवन 16 वर्ष की उम्र से शुरू होता है। जैसे-जैसे उम्र ढलती है, इन्हें कोई नहीं पूछता। बाद की जिन्दगी बेहद तकलीफदेह बन कर रह जाती है क्योंकि इनकी कीमत इनके चेहरे से लगाई जाती है। ज्यादा उम्र वाली औरतों का बार में कोई काम नहीं रहता इसके बाद अधिकांश को देहव्यापार की मंडी का रुख करना पड़ता है. जो एक बार इस दुनिया में आ गई तो समझो यहाँ से बाहर जाने के सारे रास्ते बंद हैं। इनकी जिन्दगी बार की चकाचौंध से शुरू जरूर होती है मगर इसका अंत जिस्म फरोशी की बदनाम काली गलियों में जाकर होता है। वह सिर्फ एक ऐसी देह बनकर रह जाती है जिसे भोगने को तो अधिकांश तैयार हो जायेंगे परन्तु अपनाने को कोई नही! अक्सर सांस्कृतिक संध्या तो कहीं संस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर, थानों में, नेताओं के जन्मदिन और पार्टियों में, समाचार पत्रों में अश्लील नृत्य की खबरें प्रसारित होती रहती है। जिनकी मीडिया से लेकर राजनैतिक गलियारों में निंदा होती देखी जा सकती है। पर कभी कोई कार्यवाही नहीं होती दिखती, सरकार महिला रोजगार की बात तो करती दिख जाती है किन्तु बार बालाओं के मामले में उनके स्थाई रोजगार के लिए कोई योजना सरकार से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक सुझाई नहीं जाती। उलटा इस बार तो सुप्रीम कोर्ट ही महिलाओं के हक, महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान से जुड़े कानून की अवहेलना सा करता नज़र आ रहा है। क्या सुप्रीम कोर्ट यह भी तय कर बता सकता है कि बार डांसर महिलाएं है या नहीं है? यदि हैं तो फिर उनके सम्मान और रोजगार की रक्षा के प्रति उच्च न्यायालय प्रतिबद्ध क्यों नहीं?

-सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

निराले ऋषि की निराली दीवाली

मिले। इन्हीं का प्रचार-प्रसार एवं पालन करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। जितना आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार और अनुयायी बढ़ेंगे, उतने स्वामी दयानन्द अमर होंगे। आज हम आर्यों के समक्ष ऋषि दयानन्द, आर्य समाज और सिद्धान्तों की रक्षा व प्रचार का ज्वलन्त प्रश्न खड़ा हुआ है यदि इस पर सब मिलकर गम्भीरता पूर्वक, ईमानदारी, त्यागभाव, सेवाभाव आदि की दृष्टि से चिन्तन-मनन व क्रियान्वयन नहीं करेंगे तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। यदि ऋषि को जीवित-जागृत व अमर रखना है तो आर्य समाज को अपने सत्य स्वरूप को पहिचानना होगा। ऋषि दयानन्द ने जीवन भर, नाम, यश, सुख, आराम आदि के लिए न चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मन्दिर, स्मारक गद्दी आदि नहीं बनाई। वे रातों में जागकर जीवन-जगत में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, पाप, अधर्म, अन्धविश्वास आदि के लिए घन्टों करुण क्रन्दन किया करते थे। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है। यह पीड़ा ऋषि की थी। वह युग पुरुष सारा जीवन जहर पीता रहा, पत्थर सहता रहा, गालियां-विरोध सुनता रहा। बदले में संसार को दया और आनन्द लुटाता रहा। वह सत्य का पुजारी जीवन भर असत्य, अधर्म, गुरुडम, मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा वेद-विरुद्ध बातों से अकेला लड़ता रहा, कभी गलत बातों से समझौता नहीं किया। सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, अर्थ व पद लोभ नहीं आने दिया। वह दिव्यात्मा हर पहलू से खरा ही उतरा। उनके कट्टर विरोधी, आलोचक भी अन्दर से प्रशंसक ही रहे। वह देवपुरुष उनसठ साल के डेपुटेशन पर संसार में आया था। घोर अविद्या में डूबी मानव जाति को वेदपथ और सन्मार्ग दिखाकर चला गया। सच तो यह है कि दुनिया ने ऋषि को समझा, जाना और माना ही नहीं।

दीवाली पर समस्त आर्य समाज व ऋषि भक्त ऋषि की स्मृति को निर्वाणोत्सव के रूप में मनाते हैं। निर्वाण शब्द मुक्त होना, आगे बढ़ जाना और बुझ जाने के अर्थ में आता है। अजमेर के भिनाय भवन में अन्तिम समय में ऋषिवर शान्तभाव से लेटे थे। सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। वह महायोग अनुभव कर रहा था, आज प्रयाण बेला है। पूछा- 'आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है?' भक्त ने कहा- 'आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीवाली का पर्व है।' पूरे शरीर पर भयंकर फफोले थे। फिर भी उनका मुखमण्डल शान्त व प्रसन्न था। सबको संगठित होकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। थोड़ी देर बाद बोले- सभी खिड़कियां-दरवाजे खोल दो। प्रार्थना-मन्त्रपाठ किया। तीव्रस्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्तभाव में मुख से उच्चारित होने लगा- हे दयामय सर्वशक्तिमान परमेश्वर। तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है। यह कहकर लम्बी श्वास खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा देवता अपनी इहलीला, समाप्त कर प्रभु की शरण में चला गया। सभी भक्त जन असहाय होकर देखते रहे। पं. गुरुदत्तजी पहली बार ऋषि के दर्शन करने आए थे। ईश्वर पर उनकी दृढ़ आस्था नहीं थी। ऋषि की अन्तिम यात्रा के अपूर्व दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त पक्के ईश्वर विश्वासी आस्तिक बन गए। उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन ऋषि मिशन के लिए समर्पित कर दिया। जाते-जाते भी ऋषि गुरुदत्तजी को ईश्वर विश्वास का सन्देश दे गए। ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक व शिक्षाप्रद था। मृत्यु भी प्रेरक बनी। दीवाली पर प्रभु भक्त योगी का विदा होना, सन्देश दे रहा है-वेद ज्ञान की ज्योति को जलाये रखना और आर्य समाज को आगे बढ़ाते रहना। संसार के इतिहास में मृत्युजयी ऋषि ऐसे थे जो होश में, तिथि, पूछकर, स्नान-प्रार्थना करके, प्रभु का स्मरण-धन्यवाद करते हुए अपने विषदाता को क्षमादान देकर प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए गए। ऐसी अद्भुत, चमत्कारी प्रेरक मृत्यु निराले मुक्तात्मा कोई ही सौभाग्य से मिलती है। ऋषिवर! तुम धन्य हो? तुम्हारा तप, त्याग, सेवा भरा आजीवन संघर्ष पूर्ण इतिहास स्वर्णिम व प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार व योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय हैं। तुमने न जाने कितने जीवन पथ से भटके हुए लोगों को नवजीवन दिया। तुमने भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा। जिसने तुम्हें देखा, सुना, पढ़ा और जो सम्पर्क में आया वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम सत्य के अन्वेशक, वक्ता, पुजारी, प्रचारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। तुम्हारा दूसरा पर्याय और कोई नहीं हुआ।

दीवाली ऋषि-स्मृति पर्व है। उस महामानव के उपकारों, योगदान, महत्त्व, विशेषताओं आदि को स्मरण व कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्यतिथि है। संकल्प लेने, दुहराने और अपने को सुधारने की मंगल बेला है। ऋषि भक्तों! आर्यो! उठो! जागो! आंखें खोलो! अपने स्वरूप को पहिचानो। अन्तस में ज्ञान दीप जलाओ! प्रतिवर्ष परम्परागत दीवाली आती है। हम आर्यजन भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाते हैं, मेला लगता है, भाषण होते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्त्तव्य पूरा समझ लेते हैं? सोचो! क्या निर्वाणोत्सव की यही मूल चेतना, सन्देश व भावना है? ये पर्व, जयन्तियां, उत्सव, वेदकथाएं, यज्ञ, सम्मेलन आदि हमें जगाने, संभलने, आत्मबोध व सत्यबोध कराने आते हैं और दृष्टि, सोच, विचार व ज्ञान देते हैं! क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे, कहां जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों, आदर्शों विचारों सिद्धान्तों व नवजागरण के लिए जीवन बलिदानी ऋषि ने आर्य समाज बनाया था? जो हमें कर्त्तव्य व जिम्मेदारी सौंपी थी। ऋषि श्रद्धांजलि और ज्योति पर्व हमसे पूछ रहा है? उन कार्यो के लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या हमारा जीवन आर्यत्व पूर्ण है? कुछ नहीं किया तो कुछ करने का विचार संकल्प व व्रत लो, जब जागजाओ, तभी सबेरा है। ऋषि भक्त, आर्य समाज अनुयायी कहलाना है तो उनके बताए रास्ते पर चलो। यह ऋषि स्मृति का प्रकाश पर्व कह रहा है अपने अन्दर के व्यर्थ के अहंकार स्वार्थ, ईर्ष्या-द्वेष पर प्रतिष्ठा आदि के अज्ञान को ज्ञान विचार विवके से हटाओ। भूल में भूल हो रही है। व्यर्थ के विवादों झगड़ों समस्याओं आदि में समय, शक्ति, धन व सोच को मत लगाओ। आर्य समाज के पास बहुत बड़ी विचार सम्पदा है। उसको सम्भालो तभी ऋषि निर्वाणोत्सव की सार्थकता, उपयोगिता तथा सच्ची ऋषि श्रद्धांजलि होगी।

बोध कथा

जैसी जाकी भावना

स्व. महात्मा हंसराज जी एक कथा सुनाया करते थे। एक वृद्धा स्त्री थी। भारी-सी गठड़ी उसके सिर पर थी; चली जाती थी अपने ग्राम से किसी दूसरे ग्राम की ओर। चलते-चलते थक गई। तभी उसने एक व्यक्ति को देखा, जो घोड़े पर बैठा वेग से चला जाता था। उसे देखकर बुढ़िया ने आवाज़ दी-''अरे ओ बच्चा! ओ घोड़ेवाले! एक बात तो सुन!''

घोड़े वाले ने सुना। यह देखने के लिए रुक गया कि बुढ़िया क्या कहती है। घोड़े को रोककर बोला-''क्या बात है माई?''

वृद्धा ने कहा -''पुत्र! मुझे उस सामने वाले ग्राम में जाना है। थक बहुत गई हूँ। यह गठड़ी मुझसे उठाई नहीं जाती। तू भी उधर जा रहा है। यह गठड़ी घोड़े पर रख ले तो मुझे सरलता हो जाये।''

अश्वारोही ने कहा-'' माई! तू है पैदल, मैं हूँ घोड़े पर। ग्राम अभी काफ़ी दूर है। पता नहीं तू कब तक वहाँ पहुँचेगी! मैं अभी पाँच मिनट के पश्चात् वहाँ पहुँचकर आगे चला जाऊँगा। तब मैं क्या तेरी प्रतीक्षा करता रहूँगा?''

यह कहकर वह चला गया। परन्तु अभी दो ही फ़र्लांग गया था तो उसके मन ने कहा-'तू भी विचित्र मूर्ख है! वह वृद्धा है, शीघ्र चल भी नहीं सकती। तुझे गठड़ी देती थी। गठड़ी में कोई मूल्यवान् वस्तु भी हो सकती है। उसे लेकर तू चला जाय तो तुझे पूछने वाला कौन? चल वापस, उससे गठड़ी ले ले।'

अब देखिये कि एक व्यक्ति का विचार दूसरे के मन पर कैसे प्रभाव डालता है। अश्वारोही वापस आया। वृद्धा के पास पहुँचकर बोला-''माई! ला, दे-दे अपनी गठड़ी। मैं ले चलता हूँ। उस ग्राम में पहुँचकर तेरी प्रतीक्षा करूँगा।''

वृद्धा ने कहा-''ना बच्चा! अब तू जा। मुझे गठड़ी नहीं देनी है।''

घुड़सवार ने कहा-''अरे! अभी तो तू कह रही थी कि गठड़ी ले चल। अब ले चलने को तैयार हुआ तो कहती है कि गठड़ी नहीं देनी। यह उलटी बात तुझे किसने समझाई है?''

वृद्धा मुस्कराकर बोली-''उसने समझाई है, बच्चा, जिसने तुझे यह समझाया कि माई की गठड़ी ले-ले। जो तेरे भीतर बैठा है, वहीं मेरे भीतर भी बैठा है। तुझे उसने कहा कि गठरी ले-ले और भाग जा। मुझे उसने समझाया कि गठड़ी नहीं देनी, नहीं तो भाग जायेगा। अत: तू जा भाई! मैं अपनी गठड़ी स्वयं ही ले जाऊँगी।''

इस प्रकार एक मन का विचार दूसरे मन के विचार पर प्रभाव डालता है। अत: भूलकर भी मन में खोटे विचार न आने दो! - *साभार: बोध कथाएं*

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27/28 अक्टूबर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 अक्टूबर, 2016

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में वैदिक सत्संग

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के 94वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर वैदिक सत्संग का आयोजन 8 से 13 नवम्बर, 2016 तक किया जा रहा है। इस अवसर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के प्रवचन एवं श्री भानु प्रताप शास्त्री के भजन होंगे।

समापन के अवसर पर विभिन्न विषयों पर वैदिक विद्वानों के प्रवचन होंगे। - ***दयानन्द यादव, मन्त्री***

आर्य समाज देवनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज देवनगर, नई दिल्ली दिनांक 3 से 6 नवम्बर 2016 के मध्य अपना वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद शतकीय यज्ञ, आर्य महिला सम्मेलन एवं बच्चों द्वारा आयोजित कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाएंगे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश 'श्रोत्रिय' जी होंगे।

-***दिव्य प्रकाश शारद,मंत्री***

महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह

द. दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह एवं आर्य समाज मस्जिद मोठ वार्षिकोत्सव 4 से 6 नवम्बर 2016 तक डॉ. पूर्ण सिंह डबास की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत संगीत संध्या एवं वेद कथा का आयोजन किया जाएगा। - ***चतर सिंह नागर, संयोजक***

वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज रामकृष्ण पुरम् एवं डी.डी.ए. फ्लैट्स मुनीरका, नई दिल्ली वेद प्रचार समारोह दिनांक 11 से 13 नवम्बर 2016 को आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत यज्ञ, भजन व प्रवचन का आयोजन किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा श्री जयपाल शास्त्री जी होंगे। - ***डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी, मंत्री***

आर्य समाज मानसरोवर पार्क का 31वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मानसरोवर पार्क शाहदरा का 31वां वार्षिकोत्सव 11 से 13 नवम्बर 2016 तक आयोजित होगा। यज्ञ ब्रह्मा आ. भूदेव शास्त्री 'साहित्याचार्य' जी होंगे एवं विशिष्ठ अतिथि श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी होंगी। - ***संदीप वेदालंकार, मंत्री***

शोक समाचार आचार्य अर्जुन देव वर्णी का निधन

आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्ष संस्कृति के पोषक, प्रवक्ता आचार्य अर्जुनदेव वर्णी का 22 अक्टूबर 2016 लगभग 70 वर्ष की आयु में प्रातः 5 बजे निधन हो गया। वे आचार्य बलदेव जी के गुरुकुल कालवा के प्रथम स्नातक एवं उनके मानसपुत्र के रूप में जाने जाते थे। उनका अन्तिम संस्कार गुरुग्राम में पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य सत्यजीत, आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य सत्प्रवत एवं कन्हैयालाल आर्य जी द्वारा वेद मन्त्रों से हुआ। हरियाणा सभा के मन्त्री मा. रामपाल जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा 25 अक्तूबर को वैदिक कन्या उ. विद्यालय जैकमपुरा में सम्पन्न हुई, जिसमें आ.अखिलेश्वर, आ.आर्य नरेश, आ. ज्ञानेश्वर, आ. नन्द किशोर, आ. सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम, आ. रामवीर, आ. सर्वमित्रार्य, आ.चन्द्रदेव, पद्मचन्द आर्य, चन्द्रप्रकाश गुप्ता, ईश्वर दहिया सहित अन्य अनेक महानुभवों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह